ज्ञान सरोवर में हुआ सर्व धर्मों के संतों का संगम

प्रजापिता ब्रह्माकुमारीज.के ज्ञान सरोवर परिसर में 28अगस्त से 1सितम्बर 2010 तक स्वर्णिम युग के लिए परमात्म योजना वर्ष के अर्न्तगत स्वर्णिम युग की स्थापना में आध्यात्मिक योगदान विषय पर सर्व धर्म सम्मेलन एवं राजयोग शिविर का आयोजन किया गया। इस सम्मेलन में एक हजार से भी अधिक संतों, धार्मिक संस्थानों के संरक्षक, अध्यक्ष एवं प्रबंधकों ने भाग लिया। सम्मेलन के स्वागत एवं उद्घाटन सत्र में म0म0 स्वामी श्री सेवानंद जी, स्वामी वेदानंद सरस्वती जी, स्वामी लक्ष्मीप्रसाद शास्त्री जी,मुवल्लिम अलहेज सयैद गुलाम किबरिया दस्तगिर जी, संत सुरेन्दर दास जी, संत कृपाल सिंह जी, स्वामी शास्वतानंद जी मंच पर उपस्थित थें।

त्रिवेणी संगम एवं संतों की नगरी इलाहाबाद से पधारी धार्मिक प्रभाग की राष्ट्रीय संयोजिका, ब्र0कु0 मनोरमा दीदी जी ने कार्यक्रम का उद्देश्य एवं लक्ष्य स्पष्ट करते हुए कहा कि आज समाज में मानवीय मूल्य विलुप्त हो रहे हैं,वर्तमान समय शिक्षा से अधिक दिक्षा की आवश्यकता हैं। अर्न्तजगत को जानने एवं आध्यात्मिकता को जीवन में अपनाने से हम स्वर्णिम युग के स्वप्न को साकार कर सकते हैं। यहां हम सभी संकीर्णता से ऊपर उठ कर, मजहब की दीवारों को तोड़ कर, मुहब्बत के एकसूत्र में पिरोकर सतयुग की पुनर्स्थापना में अपना सहयोग दें।

ज्ञान सरोवर की निदेशिका ब्र0कु0 डा0 निर्मला दीदी जी ने मुख्य वक्तव्य देते हुए कहा कि आज समाज में हिंसा, तनाव, भ्रष्टाचार बढ़ता जा रहा हैं, अभी पाप का घड़ा भर चुका हैं, पाप की अति हो चुकी है इसलिए सृष्टि के नियम अनुसार परिवर्तन होना ही है, अभी कलियुग का अंत और सतयुग की आदि पुरुषोत्तम संगमयुग का समय चल रहा हैं जबकि स्वयं परमात्मा का अवतरण सृष्टि के परिवर्तन के लिए होता हैं।

म0म0 स्वामी श्री सेवानंद जी ने, पंचायती निरंजन अखाड़ा, गोधरा ने अपनी शुभभावना देते हुए कहा कि आध्यात्मिक विद्या केवल वाणी द्वारा संदेश देने से नहीं परंतु अपने व्यवहारिक जीवन द्वारा ही दी जा सकती हैं, आज विज्ञानयुग में बुद्धिजीवी मनुष्य अज्ञात शक्ति का अनुभव करने के लिए प्रमाण मांगते हैं परंतु हमें बौद्धिक स्तर से भले अलग हो गये हैं पर ध्यान और प्रेम के मार्ग से एक हैं, जब तक हम आत्मा का अनुभव नही करते हैं तब तक परमात्म शक्ति का अनुभव नही कर सकते।

स्वामी वेदानंद सरस्वती जी, विदिशा ने कहा कि पूरे विश्व में भारत में ही नारी का आदरणीय स्थान हैं, यहां पर ही भारत को भारत माता कहकर पुकारा जाता हैं, इस संस्था में हजारों बहनें अपना सर्वस्व समर्पण कर पूरे विश्व भर में आध्यात्मिकता का संदेश फैला रही है। उन्होंने आत्मिक प्रेम व दान का भी महत्व बताया।

मुवल्लिम अलहेज सयैद गुलाम किबरिया दस्तगिर, दरगाह अजमेर शरीफ अजमेर जी ने कहा कि परमात्मा सारी कायनात का मालिक है, उसके कई नाम हैं, अल्लाह कहते हैं कि मेरी इबादत करो पर मेरे बनाए बंदो से पहले मोहब्बत करो। धर्म और आतंकवाद का कोई रिश्ता नही जैसे आग और पानी का कोई रिश्ता नहीं।

संत सुरेंद्र दास, फिलौर जी ने कहा कि जब वह यहां पहुंचे तो उन्हें ऐसा लगा जैसे स्वर्ग में पहुंच गये। यहां पर प्रभु पिता परमात्मा से सभी को जोड़ने का प्रयत्न किया जा रहा हैं। कहते है कि साधु महात्मा एक पारस की तरह है जो दूसरों को सोना बना देते हैं परंतु यहां पर यह पारस जिनको लगते हैं उन्हें भी आप समान पारस बना देते है।

वल्साड से पधारे स्वामी लक्ष्मीप्रसाद शास्त्री जी ने कहा कि हर धर्माचार्य को अपनी बुद्धि, विद्या और शक्ति का उपयोग समाज के लिए करना चाहिए, भारत भूमि देवताओं की भूमि हैं, यहां पर भिन्नता होते हुए भी हम सब एक है, हमारा लक्ष्य एक है।

स्वामी कृपाल सिंह जी, आध्यात्म निकेतन, ग्वालियर ने कहा कि आज विश्व में अशांति बढ़ती जा रही हैं, अगर हम विश्व में परिवर्तन लाना चाहते है तो पहले हमें स्वयं का परिवर्तन करना होगा। जब हम अच्छाई का अनुसरण करेंगे तो उसके वजन से बुराई का वजन स्वतः कम हो जायेगा।

कार्यक्रम का उद्घाटन दीप प्रज्जवलित करके किया गया। भ्राता सतीश के नेतृत्व में मधुर वाणी ग्रुप ने सभी मेहमानों का स्वागत गीत द्वारा स्वागत किया। धार्मिक प्रभाग के मुख्यालय संयोजक ब्र0कु0 रामनाथ भाई ने पूरे भारत वर्ष से विभन्न राज्यों से पधारे संतगणों एवं धार्मिक संस्थानों के मुख्यों का वाणी द्वारा स्वागत किया। ब्र0कु0 कविता बहन, भरतपुर ने कुशलता पूर्वक मंच संचालन किया। कार्यक्रम के अंत में सभी संतों को शॉल ओढ़ाकर सम्मानित किया गया।